नाराज़

राहत इंदौरी

VISIT…

नाराज़

नाराज़

राहत इंदौरी

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

मंजुल पब्लिशिंग हाउस
कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय
द्वितीय प्रीत कॉम्प्लेक्स , 42 मालवीय नगर , भोपाल - 462003
विक्रय एवं विपणन कार्यालय
7 / 32 , भू तल , अंसारी रोड , दरियागंज , नई दिल्ली - 110002
वेबसाइट : www.manjulindia.com
वितरण केन्द्र
अहमदाबाद , बेंगलुरू , भोपाल , कोलकाता , चेन्नई ,
हैदराबाद , मुम्बई , नई दिल्ली , पुणे

कॉपीराइट © 2016 राहत इंदौरी
सर्वाधिकार सुरक्षित

यह संस्करण 2016 में पहली बार प्रकाशित

ISBN 978-81-8322-702-5

इस पुस्तक के लेखक होने की नैतिक ज़िम्मेदारी राहत इंदौरी की है।

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुन : प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से , किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

सामग्री

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24

25

26

27

28

29

30

31

32

33

34

35

36

37

38

39

40

41

42

43

44

45

46

47

48

49

50

51

52

53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80

81

82

83

84

85

86

87

88

89

90

जो नहीं जानते उसे न कहो ,
बल्कि जो जानते हो वह भी सब का सब न कहो ।
–हज़रत अली

हर मुसाफ़िर है सहारे तेरे
कश्तियां तेरी किनारे तेरे

तेरे दामन को ख़बर दे कोई
टूटते रहते हैं तारे तेरे

धूप दरिया में रावानी थी बहूत
बह गये चांद सितारे तेरे

तेरे दरवाज़े को जुम्बिश[1] न हुई
मैंने सब नाम पुकारे तेरे

बे तलब आंखों में क्या-क्या कुछ है
वह समझता है इशारे तेरे

कब पसीजेंगे यह बहरे बादल
हैं[2] शजर हाथ पसारे तेरे

मेरा इक पल भी मुझे मिल न सका
मैंने दिन रात गुज़ारे तेरे

तेरी आंखें तेरी बीनाई[3] हैं
तेरे मन्ज़र हैं, नज़ारे तेरे

यह मेरी प्यास बता सकती है
क्यों समन्दर हुए खारे तेरे

जो भी मनसूब[4] तेरे नाम से थे
मैंने सब क़र्ज़ उतारे तेरे

तूने लिखा मेरे चेहरे पे धुआं
मैंने आइने संवारे तेरे

और मेरा दिल वही मुफ़लिस[5] का चिराग़
चांद तेरा है सितारे तेरे

1. हलचल
2. पेड़
3. दृष्टि शक्ति
4. संबंधित
5. ग़रीब

जितने अपने थे सब पराए थे
हम हवा को गले लगाए थे

जितनी क़समें थी सब थीं शर्मिंदा
जितने वादे थे सर झुकाए थे

जितने आँसू थे सब थे बेगाने
जितने मेहमां थे बिन बुलाए थे

सब क़िताबें पढी पढ़ाई थीं
सारे क़िस्से सुने सुनाए थे

एक बंजर ज़मीं के सीने में
मैंने कुछ आसमां उगाए थे

वरना औक़ात क्या थी सायों की
धूप ने हौसले बढ़ाए थे

सिर्फ़ दो घूंट प्यास की ख़ातिर
उम्र भर धूप में नहाए थे

हाशिए पर खड़े हुए हैं हम
हम ने ख़ुद हाशिए बनाए थे

मैं अकेला उदास बैठा था
शाम ने कहकहे लगाए थे

है ग़लत उस को बेवफ़ा कहना
हम कहां के धुले धुलाए थे

आज कांटों भरा मुक़द्दर है
हम ने गुल भी बहुत खिलाए थे

सिर्फ़ सच और झूठ की मीज़ान[1] में रखे रहे
हम बहादुर थे मगर मैदान में रखे रहे

जुगनुओं ने फिर अंधेरों से लड़ाई जीत ली
चांद सूरज घर के रोशनदान में रखे रहे

धीरे - धीरे सारी किरनें ख़ुदकुशी करने लगीं
हम सहीफ़ा[2] थे मगर जुज़दान[3] में रखे रहे

बन्द कमरे खोल कर सच्चाइयां रहने लगीं
ख़्वाब कच्ची धूप थे दालान में रखे रहे

सिर्फ़ इतना फ़ासला है जिन्दगी से मौत का
शाख़ से तोड़े गए गुलदान में रखे रहे

ज़िन्दगी भर अपनी गूंगी धड़कनों के साथ-साथ
हम भी घर के क़ीमती सामान में रखे रहे

1. तराज़ू
2. पत्र, साहित्यिक कृति
3. पवित्र ग्रंथ को लपेट कर रखने वाला कपड़ा, आवरण

धूप बहुत है मौसम जल थल भेजो ना
बाबा मेरे नाम का बादल भेजो ना

मौलसरी[1] की शाखों पर भी दिए जलें शाखों
का केसरिया आंचल भेजो ना

नन्ही मुन्नी सब चहकारें कहां गईं
मोरों के पैरों की पायल भेजो ना

बस्ती बस्ती दहशत किसने बो दी है
गलियों बाज़ारों की हलचल भेजो ना

सारे मौसम एक उमस के आदी हैं
छांव की ख़ुशबू , धूप का सन्दल भेजो ना ,

मैं बस्ती में आख़िर किस से बात करूं
मेरे जैसा कोई पागल भेजो ना

1. बकुल वृक्ष

सर पर सात आकाश , ज़मीं पर सात समन्दर बिखरे हैं
आंखें छोटी पड़ जाती हैं। इतने मंज़र बिखरे हैं

ज़िन्दा रहना खेल नहीं है। इस आबाद ख़राबे मैं
वह भी अक्सर टूट गया है हम भी अक्सर बिखरे हैं

इस बस्ती के लोगों से जब बातें की तो यह जाना
दुनिया भर को जोड़ने वाले अन्दर अन्दर बिखरे हैं

इन रातों से अपना रिश्ता जाने कैसा रिश्ता है
नींदें कमरों में जागीं हैं ख़्वाब छतों पर बिखरे हैं

आंगन के मासूम शजर[1] ने एक कहानी लिखी है
इतने फल शाखों पे नहीं थे जितने पत्थर बिखरे हैं

सारी धरती , सारे मौसम , एक ही जैसे लगते हैं
आंखों आंखों क़ैद हुए थे मन्ज़र मन्ज़र बिखरे हैं

1. पेड़

सवाल घर नहीं बुनियाद पर उठाया है
हमारे पांव की मिट्टी ने सर उठाया है

हमेशा सर पे रही इक चट्टान रिश्तों की
यह बोझ वह है जिसे उम्र भर उठाया है

मेरी गुलेल के पत्थर का कारनामा था
मगर यह कौन है जिसने समर[1] उठाया है

यही ज़मीं में दबाएगा एक दिन हम को
यह आसमान जिसे दोश पर उठाया है

बुलन्दियों को पता चल गया कि फिर मैंने
हवा का टूटा हुआ एक पर उठाया है

महाबली से बग़ावत बहुत ज़रूरी थी
क़दम यह हम ने समझ सोच कर उठाया है

1. फल

पहली शर्त जुदाई है
इश्क़ बड़ा हरजाई है

गुम हैं होश हवाओं के
किस की ख़ुशबू आई है

ख़्वाब क़रीबी रिश्तेदार
लेकिन नींद पराई है

चांद तराशे सारी उमर
तब कुछ धूप कमाई है

मैं बिछड़ा हूं डाली से
दुनिया क्योंमुरझाई है

दिल पर किसने दस्तक दी
तुम हो या तनहाई है

दरिया दरिया नाप चुके
मुट्ठी भर गहराई है

सूरज टूट के बिखरा था
रात ने ठोकर खाई है

कोई मसीहा क्या जाने
ज़ख़्म है या गहराई है

वाह रे पागल वाह रे दिल
अच्छी क़िस्मत पाई है

उंगलियां यूं न सब पर उठाया करो
ख़र्च करने से पहले कमाया करो

ज़िन्दगी क्या है ख़ुद ही समझ जाओगे
बारिशों में पतंगें उड़ाया करो

दोस्तों से मुलाक़ात के नाम पर
नीम की पत्तियों को चबाया करो

शाम के बाद जब तुम सहर देख लो
कुछ फ़क़ीरों को खाना खिलाया करो

अपने सीने पे दो गज़ ज़मीं बांध कर
आसमानों का ज़र्फ़ आज़माया करो

चांद सूरज कहां , अपनी मन्ज़िल कहां
ऐसे वैसों को मुंह मत लगाया करो

मुझे डुबो के बहुत शर्मसार रहती है
वह एक मौज जो दरिया के पार रहती है

हमारे ताक़ भी बेज़ार हैं उजालों से
दिए की लौ भी हवा पर सवार रहती है

फिर उसके बाद वही बासी मन्ज़रों के जुलूस
बहार चन्द ही लम्हे बहार रहती है

इसी से कर्ज़ चुकाए हैं मैंने सदियों है
यह ज़िन्दगी जो हमेशा उधार रहती है

हमारी , शहर के दानिश्वरों[1] से यारी है
इसी लिए तो क़बा तार तार रहती है

मुझे ख़रीदने वालों ! क़तार में आओ
वह चीज़ हूँ जो पस - ए - इश्तेहार[2] रहती है

1. बुद्धिजीवी
2. अविज्ञापित , जो प्रचारित न हो

हंसते रहते हैं मुसलसल हम तुम
हों न जाएं कहीं पागल हम तुम

जैसे दरिया किसी दरिया से मिले
आओ ! हो जाएं मुकम्मल हम तुम

उड़ती फिरती है हवाओं में ज़मीं
रेंगते फिरते हैं पैदल हम तुम

प्यास सदियों की लिए आंखों में
देखते रहते हैं बादल हम तुम

धूप हमने ही उगाई है यहां
हैं इसी राह का पीपल हम तुम

शहर की हद ही नहीं आती है
काटते रहते हैं जंगल हम तुम

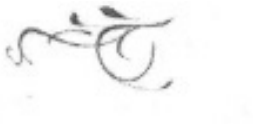

दरमियां इक ज़माना रक्खा जाए
तब कोई पल सुहाना रक्खा जाए

सर पे सूरज सवार रहता है
पीठ पर शामियाना रक्खा जाए

तो यह अब तय हुअ कि अपने साथ
कोई अपने सिव न रक्खा जाए

खूब बातें रहेंगी रस्ते भर
धूप से दोस्ताना रक्खा जाए

हों निगाहें ज़मीन पर लेकिन
आसमां पर निशाना रक्खा जाए

ज़ख़म पर ज़ख़म का गुमां न रहे
ज़ख़म इतना पुराना रक्खा जाए

दिल लुटाने में एहतियात रहे
यह ख़ज़ाना खुला न रक्खा जाए

नील पड़ते रहें जबीनों पर
पत्थरों को ख़फ़ा न रक्खा जाए

यार ! अब उस की बेवफ़ाई का
नाम कुछ शायराना रक्खा जाए

हाथ खाली हैं तेरे शहर से जाते जाते
जान होती तो मेरी जान , लुटाते जाते

अब तो हर हाथ का पत्थर हमें पहचानता है
उम्र गुज़री है तेरे शहर में आते जाते

रेंगने की भी इजाज़त नहीं हमको वरना
हम जिधर जाते नए फूल खिलाते जाते

मुझ को रोने का सलीक़ा भी नही है शायद
लोग हंसते हैं मुझे देख के आते जाते

अब के मायूस हुआ यारों को रुख़सत करके
जा रहे थे तो कोई ज़ख़्म लगाते जाते

हम से पहले भी मुसाफ़िर कई गुज़रे होंगे
कम से कम राह के पत्थर तो हटाते जाते

हौसले ज़िन्दगी के देखते हैं
चलिए कुछ रोज़ जी के देखते हैं

नींद पिछली सदी से ज़ख़्मी है
ख़वाब अगली सदी के देखते हैं

रोज़ हम इस अंधेरी धुंध के पार
क़फ़िले रोशनी के देखते हैं

धूप इतनी कराहती क्यों है
छांव के ज़ख़्म सी के देखते हैं

टकटकी बांध ली है आंखों ने
रास्ते वापसी के देखते हैं

बारिशों से तो प्यास बुझती नहीं
आइए ज़हर पी के देखते हैं

हमें दिन रात मरना चाहिए था
मियां कुछ गुज़रना चाहिए था

बहुत ही ख़ूबसूरत है यह दुनिया
यहां कुछ दिन ठहरना चाहिए था

मुझे तूने किनारे से है जाना
समन्दर में उतरना चाहिए था

यहां सदियों से तारीकी जमी है
मेरी शब को सहरना चाहिए था

अकेली रात बिस्तर पर पड़ी है
मुझे इस दिन से डरना चाहिए था

डुबो कर मुझ को ख़ुश होता है दरिया
उसे तो डूब मरना चाहिए था

किसी से बेवफाई की है मैंने
मुझे इक़रार करना चाहिए था

यह देखो किरचियां हैं आइनों की
सलीके से संवरना चाहिए था

किसी दिन उसकी महफ़िल में पहुंच कर
गुलों में रंग भरना चाहिए था

फ़लक पर तबसरा[1] करने से पहले
ज़मीं का क़र्ज़ उतरना चाहिए था

1. समीक्षा

दांव पर मैं भी दांव पर तू भी
बे ख़बर मैं बे ख़बर तू भी

आसमां मुझ से दोस्ती कर ले
दरबदर मैं भी दरबदर तू भी

कुछ दिनों शहर की हवा खा ले
सीख जायेगा सब हुनर तू भी

मैं तेरे साथ तू किसी के साथ
हमसफ़र मैं भी हमसफ़र तू भी

हैं वफ़ाओं के दोनों दावेदार
मैं भी इस पुलसिरात [1] पर, तू भी

ऐ मेरे दोस्त तेरे बारे में
कुछ अलग राय थी मगर , तू भी

1. इस्लामिक मान्यता के अनुसार सिरात का पुल - जो मनुष्य के एक बाल से भी ज़्यादा पतला , तलवार से ज़्यादा तेज़ धार वाला और आग से ज़्यादा गरम होगा , जिसे मृत्यु पश्चात् प्रत्येक मनुष्य को , चाहे वो स्वर्ग में जाये या नर्क में , पार करना ही होगा ।

बैठे बैठे कोई ख़याल आया
ज़िन्दा रहने का फिर सवाल आया

कौन दरयाओं का हिसाब रखे
नेकियां , नेकियों में डाल आया

ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारते हैं
ज़िन्दगी भर न यह कमाल आया

झूठ बोला है कोई आईना
वरना पत्थर में कैसे बाल आया

वह जो दो राज़ ज़मीं थी मेरे नाम
आसमां की तरफ़ उछाल आया

क्यों ये सैलाब सा है आखों में
मुस्कराए थे हम, ख़याल आया

मौसम की मनमानी है
आंखों आंखों पानी है

साया साया लिख डालो
दुनिया धूप कहानी है

सब पर हंसते रहते हैं
फूलों की नादानी है

हाय ये दुनिया ! हाय ये लोग
हाय ! यह सब कुछ फ़ानी है

साथ इक दरिया रख लेना
रस्ता रेगिस्तानी है

कितने सपने देख लिए
आंखों को हैरानी है

दिल वाले अब कम कम हैं
वैसे क़ौम पुरानी है

बारिश , दरिया ,साग़र ,
ओस आंसू पहला पानी है

तुझ को भूले बैठे है
क्या यह कम कुरबानी है

दरिया हम से आंख मिला
देखें कितना पानी है

नाम लिखा था आज किस किस का
“ हाथ दस्ता हुआ है नर्गिस का ”

शाख पर उम्र कट गई गुल की
बाग़ है जाने कौन बेहिस[1] का

ख़्वार[2] फिरते हैं आइना होकर
जाने मुंह देखना है किस किस का

बुझ गये चांद सब हवेली के
जल रहा है चिराग़ मुफ़लिस का

सर पे रख कर ज़मीन फिरता हूँ
साथ उसका है मैं नहीं जिस का

‘ मीर ’ जैसा था दो सदी पहले
हाल अब भी वही है मजलिस[3] का

1. असंवेदनशील
2. पीड़ित
3. सदन

मेरे मरने की ख़बर है उसको
अपनी रुसवाई का डर है उसको

अब वह पहला सा नज़र आता नहीं
ऐसा लगता है नज़र है उसको

मैं किसी से भी मिलूं कुछ भी करूं
मेरी नीयत की ख़बर है उसको

भूल जाना उसे आसान नहीं
याद रखना भी हुनर है उसको

रोज़ मरने की दुआ मांगता है
जाने किस बात का डर है उसको

मंज़िलें साथ लिये फिरता है
कितना दुशवार सफ़र है उसको

सर पर बोझ अंधियारों का है मौला ख़ैर
और सफ़र कुहसारों[1] का है मौला ख़ैर

दुश्मन से तो टक्कर ली है सौ सौ बार
सामना अब के यारों का है मौला ख़ैर

इस दुनिया मे तेरे बाद मेरे सर पर
साया रिश्तेदारों का है मौला ख़ैर

दुनिया से बाहर भी निकल कर देख चुके
सब कुछ दुनियादारों का है मौला ख़ैर

और कयामत मेरे चरागों पर टूटी
झगड़ा चांद सितारों का है मौला ख़ैर

लिख रखा है हुजरा[2] पीर फ़कीरों का
और मंज़र दरबारों का है मौला ख़ैर

की कुटिया चौराहों पर वर्दी वाले आ पहुंचे
मौसम फिर त्यौहारों का है मौला ख़ैर

एक ख़ुदा है , एक पयम्बर एक क़िताब
झगड़ा तो दस्तारों का है मौला ख़ैर

वक़्त मिला तो मस्जिद भी हो आएंगे
बाकी काम मज़ारों का है मौला ख़ैर

मैंने अलिफ़[3] से ये[4] तक ख़ुश्बू बिखरा दी
लेकिन गांव गंवारों का है मौला ख़ैर

1. पहाड़
2. पहाड़
3. उर्दू वर्णमाला का आखरी अक्षर
4. उर्दू वर्णमाला का आखरी अक्षर

हमें अब इश्क़ का चाला पड़ा है
बड़े मुंहज़ोर से पाला पड़ा है

कई दिन से नहीं डूबा यह सूरज
हथेली पर मेरी छाला पड़ा है

यह साज़िश धूप की है या हवा की
गुलों का रंग क्यों काला पड़ा है

सफ़र पर मैं तो तन्हा जा रहा हूँ
यह बस्ती भर में क्यों ताला पड़ा है

मेरी पलकों पे उतरे फिर फ़रिश्ते
समन्दर फिर तह- ओ - बाला पड़ा है

सुनहरा चांद उतरा है नदी में
किनारे चांद का हाला पड़ा है

यहां पर ख़त्म हैं ऊंची उड़ानें
ज़मीं पर आसमां वाला पड़ा है

उलझ कर रह गए हैं सारे मन्ज़र
हमारी आंख में जाला पड़ा है

हवा है दोपहर तक भीगी भीगी
सवेरे देर तक पाला पड़ा है

पुराने शहरों के मन्ज़र निकलने लगते हैं
ज़मीं जहां भी खुले घर निकलने लगते हैं

मैं खोलता हूं सदफ़[1] मोतियों के चक्कर में
मगर यहां भी समन्दर निकलने लगते हैं

हसीन लगते हैं जाड़ों में सुबह के मन्ज़र
सितारे धूप पहन कर निकलने लगते हैं

बुलन्दियों का तसव्वुर[2] भी खूब होता है
कभी - कभी तो मेरे पर निकलने लगते हैं

बुरे दिनों से बचाना मुझे मेरे मौला
क़रीबी दोस्त भी बच कर निकलने लगते हैं

अगर ख़याल भी आए कि तुझ को खत लिक्खूं
तो घोंसलों से कबूतर निकलने लगते हैं

1. सीप
2. कल्पना

ज़िन्दगी की हर कहानी बे असर हो जाएगी
हम न होंगे तो यह दुनिया दर ब दर हो जाएगी

पांव पत्थर करके छोड़ेगी अगर रुक जाइये
चलते रहिए तो ज़मीं भी हमसफ़र हो जाएगी

जुगनुओं को साथ लेकर रात रोशन कीजिए
रास्ता सूरज का देखा तो सहर हो जाएगी

ज़िन्दगी भी काश मेरे साथ रहती उम्र भर
ख़ैर अब जैसे भी होनी है बसर हो जाएगी

तुम ने ख़ुद ही सर चढ़ाई थी सो अब चक्खो मज़ा
मैं ना कहता था , कि दुनिया दर्द - ए - सर हो जाएगी

तलख़ियां भी लाज़मी हैं ज़िन्दगी के वास्ते
इतना मीठा बन के मत रहिये शकर हो जाएगी

अपने दीवार ओ दर से पूछते हैं
घर के हालात घर से पूछते हैं

क्यों अकेले हैं क़ाफ़िले वाले
इक इक हमसफ़र से पूछते हैं

कितने जंगल हैं इन मकानों में
बस यही शहर भर से पूछते हैं

यह जो दीवार है , यह किस की है
हम इधर वह उधर से पूछते हैं

हैं कनीजें भी इस महल में क्या
शाहज़ादों के डर से पूछते हैं

क्या कहीं क़त्ल हो गया सूरज
रात से रात भर से पूछते हैं

जुर्म है ख़्वाब देखना भी क्या
बस यही चश्मे तर से पूछते हैं

ये मुलाक़ात आख़िरी तो नहीं
हम जुदाई के डर से पूछते हैं

कौन वारिस है छांव का आख़िर
धूप में हम सफ़र से पूछते हैं

ये किनारे भी कितने सादा हैं
कश्तियों को भंवर से पूछते हैं

वह गुज़रता तो होगा अब तन्हा
इक इक रहगुज़र से पूछते हैं

हम ने ख़ुद अपनी रहनुमाई की
और शोहरत हुई ख़ुदाई की

मैंने दुनिया से मुझ से दुनिया ने
सैकड़ों बार बेवफ़ाई की

खुले रहते हैह सारे दरवाज़े
कोई सूरत नहीं रिहाई की

टूट कर हम मिले हैं पहली बार
यह शुरूआत है जुदाई की

सोए रहते है ओढ़ कर ख़ुद को
अब जरूरत नहीं रज़ाई की

मन्ज़िलें चूमती हैं मेरे क़दम
दाद दीजे शिकस्तापाई की

ज़िन्दगी जैसे तैसे काटनी है
क्या भलाई की क्या बुराई की

इश्क़ के कारोबार में हम ने
जान देकर बड़ी कमाई की

अब किसी की जुबां नहीं खुलती
रस्म जारी है मुंह भराई की

यहां कब थी जहां ले आई दुनिया
यह दुनिया को कहां ले आई दुनिया

ज़मीं को आसमानों से मिला कर
ज़मीं आसमां ले आई दुनिया

मैं ख़ुद से बात करना चाहता था
ख़ुदा को दरमियां ले आई दुनिया

चिराग़ों की लवें[1] सहमी हुई हैं
सुना है आंधियां ले आई दुनिया

जहां मैं था वहां दुनिया कहां थी
वहां मैं हूं जहां ले आई दुनिया

तवक़्क़ो[2] हमने की थी शाखे - गुल की
मगर तीरो कमां ले आई दुनिया

1. लौ, बाती
2. उम्मीद , चाह

मौसम बुलाएंगे तो सदा कैसे आएगी
सब खिड़कियां हैं बन्द हवा कैसे आएगी

मेरा ख़ुलूस[1] इधर हैं उधर है तेरा गुरूर तेरे
बदन पे मेरी क़बा[2] कैसे आएगी

रस्ते में सर उठाए हैं रस्मों की नागिनें
ऐ जान ए इन्तज़ार ! बता कैसे आएगी

सर रख के मेरे ज़ानों पे सोई है ज़िन्दगी
ऐसे में आई भी तो कज़ा कैसे आएगी

आँखों में आंसुओं को अगर हम छुपाएंगे
तारों को टूटने की सदा कैसे आएगी

वह बे वफ़ा यहां से भी गुजरा है बारहा
इस शहर की हदों में वफ़ा कैसे आएगी

1. शराफत , खरापन , स्पष्टवादिता
2. पोशाक , परिधान

शजर हैं अब समर आसार मेरे
उगे आते हैं दावेदार मेरे

मुहाजिर[1] हैं न अब अन्सार[2] मेरे
मुखालिफ़[3] हैं बहुत इस बार मेरे

यहां इक बूंद का मुहताज हूं मैं
समन्दर हैं समन्दर पार मेरे

अभी मुर्दों में रूहें फूंक डालें
अगर चाहें तो यह बीमार मेरे

हवाएं ओढ़ कर सोया था दुश्मन
गए बेकार सारे वार मेरे

मैं आकर दुश्मनों में बस गया हूं
यहां हमदर्द हैं दो चार मेरे

हंसी में टाल देना था मुझे भी
खफ़ा क्यों हो गए सरकार मेरे

तसव्वुर[4] में न जाने कौन आया
महकउट्ठेदरो - दीवारमेरे

तुम्हारानाम दुनिया जानती है
बहुत रुस्वा हैं अब अशआर[5] मेरे

भंवर में रुक गई है नाव मेरी
किनारे रह गए इसपारमेरे

मैं ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त कर रहा हूँ
अभी सोए हैं पहरेदारमेरे

1. परदेसी , प्रवासी
2. हज़रत मोहम्मद साहब के मक्का से मदीना पलायन साथ चलने वाला अरब का एक प्रमुख कबीला
3. विरीधी
4. कल्पना
5. कवितायें

यह आईना फ़साना हो चुका है
तुझेदेखे ज़माना हो चुका है

वतन के मौसमों अब लौट आओ
तुम्हें देखेज़मानाहो चुका है

दवाएं क्या , दुआ क्या , बददुआ क्या
सभीकुछताजिरानाहोचुकाहै

अबआंसूभीपुरानेहो चुके हैं
समन्दरभीपुरानाहोचुकाहै

चलोदीवाने - ख़ासअबकामआया
परिन्दोंकाठिकानाहोचुकाहै

वहीवीरानियांहैं शहर - ए - दिलमें
यहांपहलेभीआना होचुका है

तेरी मसरूफ़ियतहम जानते हैं
मगर मौसमसुहानाहो चुका है

मोहब्बत में ज़रूरी हैंवफ़ाएं
यह नुस्ख़ाअबपुरानाहो चुका है

चलो अबहिज्र का भी हम मज़ा लें
बहुत मिलनामिलानाहो चुकाहै

हज़रों सूरतें रोशन हैं दिल में

यह दिल आईना ख़ाना हो चुकाहै

अन्दर का ज़हर चूम लिया धुल के आ गये
कितने शरीफ़ लोग थे सब खुल के आ गये

सूरज से जंग जीतने निकले थे बेवकूफ़
सारे सिपाही मोम के थे घुल केआ गये

मस्जिद में दूर-दूर कोई दूसरा नथा
हम आज अपने आप से मिल जुल के आ गये

नींदों सेजंग होती रहेगी तमाम उम्र
आंखों में बन्द ख़्वाब अगर खुल के आ गये

सूरज ने अपनी शक्ल भी देखी थी पहली बार
आईने को मज़े भी मुक़ाबिल[1] के आ गये

अन्जानेसाये फिरनेलगे हैं इधर - उधर
मौसम हमारे शहर में काबुल केआ गये

1. परिचय

इधर की शय उधर कर दी गई है
ज़मीं ज़ेरो ज़बर कर दीगई है

ये काली रात है दो चार पल की
ये कहने में सहर कर दी गई है

तआरुफ़[1] को ज़रा फैला दिया है
कहानी मुख़्तसर कर दी गई है

इबादत में बसर करनी थी लेकिन
ख़राबों में बसर कर दी गई है

कई ज़र्रात बाग़ीहो चुके हैं
सितारों कोख़बर कर दी गई है

वह मेरी हमक़दम होनेनपाई
जो मेरी हमसफ़र कर दी गई है

1. परिचय

नज़ारा देखिये कलियों के फूल होने का
यही है वक्त दुआएं क़बूलहोनेका

उन्हें बताओं के ये रास्ते सलीब के हैं
जो लोग करते हैं दावा रसूल होने का

तमाम उम्र गुज़रने के बाददुनिया में
पता चला हमेंअपनेफ़ुज़ूल होनेका

उसूल वाले हैं बेचारे इन फ़रिश्तों ने
मज़ा चखा ही नहीं बे उसूल होने का

है आसमां से बुलन्द उसका मर्तबा जिसको
शर्फ़[1] है आप के कदमों की धूल होने का

चलो फ़लक पे कहीं मन्ज़िलें तलाश करें
ज़मीं पे कुछ नहीं हासिल हसूल होने का

1. गौरव

पांव से आसमान लिपटा है
रास्तोंसे मकान लिपटा है

रोशनी है तेरे ख़यालों की
मुझसे रेशम का थान लिपटा है

कर गये सब किनारा कश्ती से
सिर्फ़ इकबादबानलिपटाहै

दे तवानाईयां मेरेमाबूद
जिस्म से खानदान लिपटा है

और मैं सुन रहा हूँ क्या - क्या कुछ
मुझसे एक बेजुबान लिपटा है

सारीदुनिया बुला रही है मगर
मुझसे हिन्दुस्तान लिपटा है

सफ़र में जब भी इरादे जवान मिलते हैं
खुली हवाएं खुलेबादबान मिलते हैं

बहुत कठिन है मसाफ़त[1] नई ज़मीनों की
क़दम - क़दम पे नयेआसमान मिलते हैं

मैं उस मुहल्ले मेंएक उम्र काट आयाहूं
जहां पे घर नहीं मिलते मकान मिलते हैं

जो ज़ोर - ज़ोर से करते हैं बात आपस में
सफ़र में ऐसे कई बेजुबान मिलते हैं

जहां - जहां भी चिराग़ों ने ख़ुदकुशी की है
वहां-वहां पेहवाके निशान मिलते हैं

रक़ीब[2], दोस्त , पड़ोसी , अज़ीज़ , रिश्तेदार
मेरे खिलाफ़ सभी के बयान मिलते हैं

1. यात्रा ,विस्तार
2. दुश्मन

उठी निगाह तो अपने ही रूबरू हम थे
ज़मीन आईना ख़ाना थी चार सू हम थे

दिनों के बाद अचानकतुम्हाराध्यान आया
ख़ुदा का शुक्र कि उस वक़्त बावुज़ू हम थे

वह आईना तो नहीं था पर आईने सा था
वह हमनहीं थेमगर यारहू - बहू हम थे

ज़मीं पेलड़ते हुए आसमां के नरग़े[1] में
कभू - कभूकोई दुश्मन कभू - कभू हम थे

हमारा ज़िक्र भी अब जुर्म हो गया है वहां
दिनों की बात है महफ़िल की आबरू हम थे

ख़यालथा कि ये पथराव रोक दें चल कर
जो होशआया तो देखा लहू - लहू हम थे

1. जाल

ऊँचे-ऊँचे दरबारों से क्या लेना
बेचारेहैंबेचारों से क्या लेना

जो मांगेंगे तूफ़ानों से मांगेंगे
काग़ज़की इन पतवारों से क्या लेना

हम ठहरेबंजारेहमबंजारोंको
दरवाज़ोंऔर दीवारोंसेक्या लेना

ख़्वाबों वाली कोई चीज़ नहीं मिलती
सोचरहा हूं बाज़ारों सेक्या लेना

ख़ाली हाथों जीतना है ये जंगहमें
लकड़ी की इन तलवारों से क्या लेना

आग में हम तो बाग लगाते हैं हमको
दोज़ख[1] तेरे अंगारों से क्या लेना

चारागरी का दावा करते फिरते हैं
बस्ती के इन बीमारों से क्या लेना

साथ हमारे कई सुनहरी सदियाँ हैं
हमेंसनीचरइतवारों सेक्या लेना

अपना मालिक अपना ख़ालिक़[2] अफ़ज़ल[3] है
आती जाती सरकारों सेक्या लेना

पांव पसारो सारी धरती अपनी है

यार इजाज़तमक्कारों सेक्या लेना

1. नर्क
2. परमात्मा
3. उत्तम

काम सब गैर ज़रूरी हैं जो सब करते हैं
और हम कुछ नहीं करते हैं ग़ज़ब करते हैं

आप की नज़रों में सूरज की है जितनी अज़मत[1]
हम चिराग़ों का भी उतना ही अदब करते हैं

हम पे हाकिम का कोई हुक्म नहीं चलता है
हम कलन्दर हैं शहंशाह लक़ब[2] करते हैं

देखिये जिसको उसे धुन है मसीहाई की
आज कल शहर के बीमार मतब[3] करते हैं

ख़ुद को पत्थर सा बना रखा है कुछ लोगों ने
बोल सकते हैं मगर बात ही कब करते हैं

एक - एकपल को क़िताबों की तरह पढ़ने लगे
उम्र भरजो न किया हमने वह अब करते हैं

1. प्रतिष्ठा
2. ख़िताब ,उपाधि
3. चिकित्सा

किसने दस्तक दी ये दिल पर कौन है
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौन है

रोशनी ही रोशनी हैहर तरफ़
मेरीआंखोंमें मुनव्वर[1] कौन है

आसमां झुक - झुक के करता है सवाल
आप केक़द के बराबर कौन है

हम रखेंगेअपने अश्कों का हिसाब
पूछनेवाला समन्दर कौन है

सारी दुनिया हैरती[2] है किस लिये
दूरतकमंज़रबमंज़र कौन है

मुझसे मिलने हीनहींदेतामुझे
क्या पता येमेरेअन्दरकौन है

1. प्रकाशमान ,प्रज्वलित
2. अचंभित

कैसा नारा कैसा क़ौल अल्लाह बोल
अभी बदलता है माहौल अल्लाह बोल

कैसे साथी कैसेयारसबमक्कार
सबकी नीयत डावाँ डोल अल्लाह बोल

जैसा गाहक वैसा माल दे कर टाल
काग़ज़ मेंअंगारेतौल अल्लाह बोल

इन्सानों से इन्सानों तक एक सदा
क्या तातारी क्या मंगोलअल्लाह बोल

सांसों पर लिख रब का नाम सुबह शाम
यही वज़ीफ़ा है अनमोलअल्लाह बोल

सच्चाई का लेकर जाप धरती नाप
दिल्ली हो या आसनसोल अल्लाह बोल

दल्लालों से नाता तोड़सबको छोड़
भेजकमीनों पर लाहोलअल्लाहबोल

हर चेहरे केसामने रख देआईना
नोच लेहरचेहरे का खोलअल्लाह बोल

शाख - ए - सहर पर महके फूल
फेंकरज़ाईआंखें खोलअल्लाहबोल

शराब छोड़ दी तुमने कमाल है ठाकुर
मगरयेहाथ में क्या लाल - लालहै ठाकुर

कई मलूल[1] से चेहरे तुम्हारे गाँव में हैं
सुना है तुम को भी इस का मलाल है ठाकुर

ख़राबहालों का जो हाल था ज़माने से
तुम्हारे फैज़ से अब भी बहाल है ठाकुर

इधर तुम्हारेख़ज़ानेजवाबदेतेहैं
उधर हमारीअना का सवाल है ठाकुर

किसी गरीब दुपट्टे का क़र्ज़ है उस पर
तुम्हारे पास जो रेशम की शाल है ठाकुर

दुआ को नन्हे गुलाबों ने हाथ उठाये हैं
बस अबयहीं से तुम्हारा ज़वाल है ठाकुर

1. उदास

मसअला प्यास का यूं हल हो जाये
जितनाअमृत है हलाहल हो जाये

शहर-ए-दिलमेंहैअजब सन्नाटा
तेरी यादआये तो हलचल हो जाये

ज़िन्दगी एक अधूरी तस्वीर
मौतआए तोमुकम्मल हो जाय

और एक मोर कहीं जंगलमें
नाचते - नाचतेपागलहोजाये

थोड़ीरौनक है हमारेदमसे
वरनाये शहर तोजंगल हो जाये

फिर ख़ुदा चाहे तोआंखें लेले
बसमेराख़्वाब मुकम्मल हो जाये

वह कभी शहर से गुज़रे तो ज़रा पूछेंगे
ज़ख़्म हो जाते हैं किसतरह दवा पूछेंगे

गुम न हो जाएं मकानों के घने जंगल में
कोई मिल जाये तो हम घर का पता पूछेंगे

मेरे सच से उन्हें क्या लेना है मैं जानता हूं
हाथ कुरआन पे रखवा के वह क्या पूछेंगे

ये रहा नामा - ए - आमाल[1] मगर तुझ से भी
कुछ सवालात तो हम भी ऐ ख़ुदा पूछेंगे

वह कहीं किरनें समेटे हुए मिल जायेगा
कबरफ़ूहोगी उजालेकी क़बा[2] पूछेंगे

वह जो मुंसिफ़[3] है तो क्या कुछ भी सज़ा दे देगा
हम भी रखते हैं ज़ुबां पहले ख़ता पूछेंगे

1. जीवन में किए गएकर्मों काहिसाब
2. पोशाक , परिधान
3. पंच , न्यायकर्ता

मुहब्बतों के सफ़र पर निकल के देखूंगा
ये पुल सिरात अगर है तो चलकेदेखूंगा

सवाल ये है कि रफ़्तार किसकी कितनी है
मैंआफ़ताबसे आगे निकलके देखूंगा

गुज़ारिशोंका कुछ उस पर असरनहीं होता
वह अब मिलेगा तो लहजा बदल के देखूंगा

मज़ाकअच्छा रहेगा यह चांद तारों से
मैं आज शाम से पहले ही ढल के देखूंगा

अजब नहीं के वही रोशनी मुझे मिल जाये
मैं अपने घर से किसी दिन निकल के देखूंगा

उजालेबांटनेवालों पे क्या गुज़रती है
किसी चिराग़ की मानिन्द जल के देखूंगा

जितना देख आये हैं अच्छा है , यही काफ़ी है
अब कहांजाइये दुनिया है , यही काफ़ी है

हमसे नाराज़ है सूरज कि पड़े सोते हैं
जागउठने का इरादाहै यहीकाफ़ी है

अब ज़रूरी तो नहीं है के वह फलदार भी हो
शाख से पेड़ का रिश्ता है यही काफ़ी है

लाओ मैं तुमको समुन्दर के इलाक़े लिख दूं
मेरे हिस्से में ये क़तरा है यही काफ़ी है

गालियों से भी नवाज़े तो करम है उसका
वह मुझे याद तो करता है यही काफ़ी है

अब अगर कम भी जियें हम तो कोई रंज नहीं
हमको जीने का सलीक़ा है यही काफ़ी है

क्या ज़रूरी है कभी तुम से मुलाक़ातभीहो
तुमसे मिलने की तमन्ना है यही काफ़ी है

अब किसी और तमाशे की ज़रूरत क्या है
ये जो दुनिया का तमाशा है यही काफ़ी है

औरअब कुछ भी नहीं चाहिये सामाने - सफ़र
पांव है , धूप है , सेहरा है यही काफ़ी है

अब सितारों पे कहां जायें तनाबें[1] लेकर

ये जो मिट्टी का घरौंदा है यही काफ़ी है

1. तम्बू

सबको रुसवा बारी बारी कियाकरो
हर मौसममेंफ़तवे जारी किया करो

रातों का नींदों सेरिश्ता टूट चुका
अपनेघरकीपहरेदारी कियाकरो

क़तरा क़तरा शबनम गिन कर क्या होगा
दरियाओंकी दावेदारी कियाकरो

रोज़ क़सीदे लिखो गूंगे बहरों के
फ़ुरसत हो तो ये बेगारीकियाकरो

शब भर आने वाले दिन के ख़्वाब बनो
दिनभर फ़िक्र - ए - शब बेदारी किया करो

चांदज़्यादारोशनहै तोरहनेदो
जुगनू भय्या जी मतभारी किया करो

जब जी चाहे मौत बिछा दो बस्ती में
लेकिन बातेंप्यारी - प्यारीकिया करो

रात बदनदरियामें रोज़ उतरती है
इस कश्ती में खूबसवारीकिया करो

रोज़वही एक कोशिश ज़िन्दा रहने की
मरने की भी कुछ तय्यारीकिया करो

कागज़ को सब सौंप दिया ये ठीक नहीं

शेर कभी ख़ुद पर भी तारी[1] किया करो

1. संक्षेपन

रात बहुत तारीक नहीं है
लेकिन घर नज़दीक नहीं है

फूलों को समझा दे कोई
हंसते रहना ठीक नहीं है

तनकीदें बारीक हैं जितनी
फ़न इतना बारीक नहीं है

कोई ताज़ा शेर हो नाज़िल
हक मांगा है भीख नहीं है

दिन है जितने काले-काले
रात इतनी तारीक नहीं है

आज तुम्हारी याद न आई
आज तबीयत ठीक नहीं है

मौत की तफ़सील होनी चाहिये
शहर में एक झील होनी चाहिये

चांद तो हर शब निकलता है मगर
ताक में कन्दील[1] होनी चाहिये

रोशनी जो जिस्म तक महदूद[2] है
रूह में तहलील[3] होनी चाहिये

हुक्म गूंगो का है , लेकिन हुक्म है
हुक्मकीतामीलहोनीचाहिये

है कबूतर जिसजगह तस्वीरमें
उस जगहएक चील होनी चाहिये

अस्लहे[4] तो ख़ैर फिर आ जायेंगे
कफ़्र्यू में ढील होनी चाहिये

1. दीपक
2. संकुचित
3. विलीन ,घुलना
4. अस्त्र - शस्त्र,युद्ध सामग्री

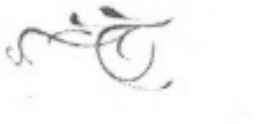

एक नया मौसम नया मंज़र खुला
कोई दरवाज़ा मेरे अन्दर खुला

एक ग़ज़ल कमरे की छत पर मुन्तसिर
एक कलम रखा है काग़ज़ पर खुला

लेकिन उड़ने की सकत[1] बाकी नहीं
है कई दिन से क़फस[2] का दर खुला

चलतेरहनेकाइरादाशर्तहै
जबभी दीवारें उठी हैं दर खुला

हो गया ऐलान फिर एक जंगका
जितने वक़्फ़े[3] में मेरा बकतर[4] खुला

साथ रहता है यही एहसास-ए-जुर्म
किस के ज़िम्मे छोड़आये घर खुला

अब मयस्सर ही कहां वह तन लेहाफ
अब कहां रहता हूं मैं शब भर खुला

मैं ख़ुदअपनेआप ही में बन्द था
मुद्दतों के बाद ये मुझ पर खुला

उम्र भरकी नींद पूरी हो चुकी
तककहीं जाकर मेरा बिस्तर खुला

कौन वहमिर्ज़ा असदुल्लाह खां

मुझसे वहतन्हाई में अक्सर खुला

1. योग्यता, सामर्थ्य
2. पिंजरा
3. अंतराल
4. कवच

दिये जलाये तोअन्जाम क्या हुआ मेरा
लिखा है तेज़ हवाओं ने मरसिया[1] मेरा

कहीं शरीफ़ नमाज़ी , कहीं फ़रेबी पीर
क़बीला मेरा , नसब[2] मेरा , सिलसिला मेरा

किसी ने ज़हर कहा है किसी ने शहद कहा
कोई समझ नहीं पाता है ज़ायका मेरा

मेंचाहताहूं ग़ज़ल आसमान हो जाये
मगर ज़मीन से चिपका है काफ़िया मेरा

मैं पत्थरों की तरह गूंगे सामईन में था
मुझेसुनातेरहेलोगवाक़ियामेरा

जहां पे कुछ भी नहीं है वहां बहुत कुछ है
ये क़ायनात तो है खाली हाशिया मेरा

उसेख़बर है के मैं हर्फ़ - हर्फ़ सूरज हूं
वहशख़्स पढ़ता रहा है लिखा हुआ मेरा

बुलन्दियोंके सफ़र में ये ध्यान आता है
ज़मीनदेखरहीहोगीरास्तामेरा

मैं जंग जीत चुका हूंमगर ये उलझन है
अबअपनेआप से होगा मुक़ाबला मेरा

खिंचा खिंचा मैं रहा ख़ुद से जाने क्यों वरना
बहुत ज़्यादा न था मुझ से फ़ासला मेरा

1. शोकगीत
2. वंशावली

सिर्फ़ ख़ंजर ही नहीं आंखों में पानी चाहिये
ऐ ख़ुदा, दुश्मन भी मुझको ख़ानदानी चाहिये

मैंने अपनी खुश्क आंखों से लहू छलका दिया
इक समन्दर कह रहा था मुझको पानी चाहिये

शहर की सारी अलिफ़ लैलाएं बूढ़ी हो चुकीं
शाहज़ादे को कोई ताज़ा कहानी चाहिये

मैंने ऐ सूरज तुझे पूजा नहीं समझा तो है
मेरे हिस्से में भी थोड़ी धूप आनी चहिये

मेरी क़ीमत कौन दे सकता है इस बाज़ार में
तुम ज़ुलेखा[1] हो , तुम्हें क़ीमत लगानी चाहिये

ज़िन्दगी है एक सफ़र और ज़िन्दगी की राह में
ज़िन्दगी भीआये तो ठोकर लगानी चाहिये

1. हज़रतयुसुफ़ सेमोहब्बतकरनेवाली मिस्र कीएक महिला

ये दुनिया जस्त[1] भर होगी हमारी
यहां कैसे बसर होगी हमारी

ये काली रात होगी ख़त्म किस दिन
न जाने कब सहर होगी हमारी

इसी उम्मीद पर येरतजगे हैं
किसी दिन रात भर होगी हमारी

दर-ए-मस्जिद पे कोई शै पड़ी है
दुआए बेअसर होगी हमारी

चले हैं गुमरही को घर से लेकर
यही तो हमसफ़र होगी हमारी

न जाने दिन कहां निकलेगा अपना
न जाने शब किधर होगी हमारी

1. फ़लांग

दुआ माँगेंगे कब तब आसमां से
ज़मीं कब मोअतबर होगी हमारी

ये दुनिया कहकशां कहती है जिसको
कभी ये रहगुज़र होगी हमारी

चुभे हैं किस क़दर तलवों में कंकर
सितारों पर नज़र होगी हमारी

बिछड़ने में ही शायद अब मज़ा है
ख़ुशीमेंआंखतरहोगी हमारी

धर्म बूढ़े हो गये मज़हब पुराने हो गये
ऐ तमाशागरतेरे करतबपुराने हो गये

आज कलछुट्टी के दिन भी घर पड़े रहते हैं हम
शाम , साहिल , तुम ,समन्दर सब पुराने हो गये

कैसी चाहत , क्या मुहब्बत , क्या मुरव्वत , क्या ख़ुलूस
इन सभी अलफ़ाज़ के मतलब पुराने हो गये

रेंगते रहते हैं हम सदियों से सदियां ओढ़कर
हम नये थे ही कहां जो अबपुराने हो गये

आस्तीनों में वही ख़ंजर वही हमदर्दियां
हैं नयेअहबाब लेकिन ढबपुरानेहो गये

एक ही मर्कज़[1] पे आंखें जंग आलूदा[2] हुईं
चाक पर फिर-फिर के रौज़-ओ-शब[3] पुराने हो गये

1. केंद्र
2. जंग लगा हुआ
3. दिनऔर रात

तूफ़ां तो इसशहरमें अक्सर आताहै
देखें अबकिस का नम्बर आताहै

यारों केभी दांतबहुत ज़हरीले हैं
हमकोभी सांपोंका मंतरआताहै

सूखे बादल होंठों पर कुछलिखतेहैं
आंखोंमेंसैलाबका मंज़रआताहै

तक़रीरों मेंसब केजौहर खुलते हैं
अन्दरजो पलता है बाहरआताहै

बच कर रहना , एक कातिल इस बस्ती में
काग़ज़ की पोशाकपहन कर आताहै

बोता हैवह रोज़ताफ़्फुन ज़हनोंमें
जो कपड़ों परइत्र लगा करआताहै

रहमत मिलने आती हैपरफैलाये
पलकोंपर जब कोईपयम्बरआता है

सूख चुका हूं फिर भी मेरे साहिलपर
पानीपीनेरोज़ समन्दर आता है

उन आंखों की नींदें गुम हो जातीहैं
जिनआंखों को ख़्याब मयस्सर आताहै

टूट रही है हर दिन मुझ में एक मस्जिद
इसबस्ती में रोज़ दिसम्बरआता है

चराग़ों का घराना चल रहा है
हवासेदोस्तानाचल रहा है

जवानी की हवाएँ चलरही है
बुजुर्गों का खज़ानाचल रहा है

मेरी गुमगुश्तगीपरहंसनेवालों
मेरेपीछेज़मानाचलरहाहै

अभी हम ज़िन्दगीसेमिलनपाये
तआरुफ़ ग़ायबाना चल रहा है

नये किरदार आते जा रहे हैं
मगर नाटकपुराना चल रहा है

वही दुनिया वहीसांसेंवही हम
वहीसब कुछ पुरानाचल रहा है

ज़्यादा क्या तवक्को[1] हो गज़ल से
मियां , बसआबओदाना चल रहा है

समन्दर से किसी दिन फिर मिलेंगे
अभी पीनापिलाना चलरहा है

वही महशर[2] वही मिलने का वादा
वही बूढ़ा बहाना चल रहाहै

यहां एक मदरसा होता था पहले
मगरअबकारख़ाना चल रहा है

1. उम्मीद ,चाह
2. क़यामतका दिन

मेरी तेज़ी, मेरी रफ़्तार हो जा
सुबक रौ , उठ कभी तलवार हो जा

अभी सूरज सदा देकर गया है
ख़ुदाके वास्ते बेदार हो जा

है फ़ुर्सत तो किसी से इश्क़ कर ले
हमारी ही तरह बेकार हो जा

तेरी दुश्मन है तेरी सादा लौही[1]
मेरी माने तो तू कुछ दुश्वार हो जा

शिकस्ता कश्तियों से क्या उम्मीदें
किनारे सो रहे हैं ,पार हो जा

तुझे क्या दर्दकी लज़्ज़तबतायें
मसीहा ,आकभी बीमारहोजा

1. साधारणस्वभाव

नदी ने धूप से क्या कह दिया रवानी में
उजालेपांवपटकनेलगे हैं पानीमें

ये कोई और ही किरदार है तुम्हारी तरह
तुम्हाराज़िक्र नहीं है मेरीकहानी में

अब इतनी सारी शबों का हिसाब कौन रखे
बहुतसवाबकमायेगये जवानी में

चमकता रहताहै सूरजमुखी में कोई और
महकरहा हैकोईऔररातरानीमें

येमौज-मौजनई हलचलें सी कैसी है
येकिस ने पांव उतारे उदासपानी में

मैं सोचता हूं कोई और कारोबार करूं
क़िताबकौनखरीदेगाइसगिरानी[1] में

1. महंगाई

मुआफ़िक[1] जो फज़ा तय्यार की है
बड़ी तदबीर[2] से हमवार की है

यहां तुझ मुझ के हिस्से में ज़ियाँ[3] है
ये दुनिया दरहम-ओ-दिनार[4] की है

यकींकैसे करूं मैं मर चुका हूं
मगर सुर्खीयही अख़बार की है

सड़कपरवर्दियां हीवर्दियां हैं
कि आमद फिर किसी त्योहार की है

यहांगूंगी है मेरी हर इबारत
ज़रूरत हाशिया बरदारकीहै

ये मिट्टी मिट्टीयों से कुछ अलग है
किसीटूटेहुएमीनारकीहै

अब एक दरिया है और फिर एक समन्दर
अभी तो सिर्फ़ नदी पार की है

न जाने किस की आमद की ख़बर है
अजबहालतदरोदीवारकीहै

मैंहर दिन काम करना चाहताहूं
मगर छुट्टी तो बस इतवार की है

तुम अपनी सर बुलन्दी पर हो नाज़ां[5]

मियां कीमतयहां दस्तारकी है

1. अनुकूल
2. युक्ति
3. घाटा
4. खाड़ी देशोंकी मुद्राएँ
5. अभिमानी

उसे अब के वफ़ाओं से गुज़र जाने की जल्दी थी
मगर इस बार मुझको अपने घर जाने की जल्दी थी

इरादा थाकि मैं कुछ देर तूफ़ां का मज़ा लेता
मगर बेचारे दरिया को उतर जाने की जल्दी थी

मैं अपनी मुट्ठियों में क़ैद कर लेता ज़मीनों को
मगर मेरे कबीले को बिखर जाने की जल्दी थी

मैं आखिर कौन सा मौसम तुम्हारेनाम करदेता
यहां हर एक मौसम को गुज़र जाने की जल्दी थी

वह शाखों से जुदा होते हुए पत्तों पे हंसते थे
बड़े ज़िन्दा नज़र थे जिनको मर जाने की जल्दी थी

मैं साबित किस तरह करता के हर आईना झूठा है
कई कम ज़र्फ चेहरोंको उतर जाने की जल्दी थी

मौक़ा है इस बार रोज़ मना त्योहार अल्लाह बादशाह
अपनी है सरकार सातों दिन इतवार अल्लाह बादशाह

तेरी ऊँची ज़ात, लश्कर तेरे साथ, तेरे सौ सौ हाथ
तू भी है तैयार हम भी हैं तैयार अल्लाह बादशाह

सबकी अपनी फ़ौज, ये मस्ती वह मौज, सब हैं राजा भोज
शेख़, मुग़ल, अंसार, सब ज़ेहनी बीमार अल्लाह बादशाह

दिल्ली ता लाहौर, जंगल चारों ओर, जिसको देखो चोर
काबुल और कंधार तोड़ दे ये दीवार अल्लाह बादशाह

फ़र्क़ न इनके बीच, ये बन्दर वह रीछ, सबकी रस्सी खींच
सारे है मक्कार, सबको ठोकर मार अल्लाह बादशाह

पढ़े लिखे बेकार, दर दर हैं फ़नकार, आलिम फ़ाजिल ख़्वार
जाहिल, ढोर, गंवार, क़ौम के हैं सरदार अल्लाह बादशाह

शाम होती है तो पलकों पे सजाता है मुझे
वह चिराग़ों की तरह रोज़ जलाता है मुझे

मैं हूं ये कम तो नहीं है तेरे होने की दलील
मेरा होना तेरा एहसास दिलाता है मुझे

अब किसी शख़्स में सच सुनने की हिम्मत है कहां
मुश्किलों ही से कोई पास बिठाता है मुझे

कैसे महफ़ूज़ रखूं खुद को अजायब घर में
जो भी आता है यहां हाथ लगाता है मुझे

जाने क्या बनना है तुझको मेरी गीली मिट्टी
कुज़ागर[1] रोज़ बनाता है मिटाता है मुझे

आब-ओ-दाना किसी बिगड़े हुए बच्चे की तरह
मैं जहां शाख पे बैठूं के उड़ाता है मुझे

1. कुम्हार

ख़ाक से बढकर कोई दौलत नइ होती
छोटी मोटी बात पे हिजरत[1] नइ होती

पहले दीप जलें तो चर्चे होते थे
और अब शहर जलें तो हैरत नइ होती

तारीखों की पेशानी पर मुहर लगा
ज़िन्दा रहना कोई करामत नइ होती

कोई और उठा रखता है छत का बोझ
दीवारों में इतनी ताक़त नइ होती

सोच रहा हूं आख़िर कब तक जीना है
मर जाता तो इतनी फ़ुरसत नइ होती

रोटी की गोलाई नापा करता है
इसी लिये तो घर में बरकत नइ होती

हमने ही कुछ लिखना पढ़ना छोड़ दिया
वरना ग़ज़ल की इतनी क़िल्लत नइ होती

मिसवाकों[1] से चांद का चेहरा छूता है
बेटा इतनी सस्ती जन्नत नइ होती

बाज़ारों में ढूंड रहा हूँ वो चीज़ें
जिन चीज़ों की कोई कीमत नइ होती

कोई क्या दे राय हमारे बारे में
ऐसे वैसों की तो हिम्मत नइ होती

1. पलायन
1. एक तरह के पेड़ की टहनी- इस्लामिक मान्यता के अनुसार इस पेड़ की टहनी से दाँत साफ़ किए जाने चाहिए

नींदें क्या-क्या ख़्वाब दिखाकर ग़ायब हैं
आंखें तो मौजूद हैं मंज़र ग़ायब हैं

बाक़ी जितनी चीज़ें थीं मौजूद हैं सब
नक़्शे में दो- चार समुन्दर ग़ायब हैं

जाने ये तस्वीर में किसका लश्कर है
हाथों में शमशीरें हैं सर ग़ायब हैं

ग़ालिब भी है बचपन भी है शहरों में
मजनूं भी है लेकिन पत्थर ग़ायब है

धन्धेबाज़ मुजावर[1] हाकिम बन बैठे
दरगाहों से मस्त कलन्दर ग़ायब हैं

दरवाज़ों पर दस्तक दें तो कैसे दें
घर वाले मौजूद मगर घर ग़ायब हैं

1. मज़ारों के सेवक

शाम से पहले शाम कर दी है
क्या कहानी तमाम कर दी है

आज सूरज ने मेरे आंगन में
हर किरन बे नयाम कर दी है

जिस से रहता है आसमां नाराज़
वह ज़मीं मेरे नाम कर दी है

दोपहर तक तो साथ चल सूरज
तूने रस्ते में शाम कर दी है

चेहरा-चेहरा हयात लोगों ने
आईनों की गुलाम कर दी है

क्या पढ़ें हम कि कुछ क़िताबों ने
रोशनी तक हराम कर दी है

पुराने दांव पर हर दिन नये आंसू लगाता है
वह अब भी एक फटे रूमाल पर ख़ुश्बू लगाता है

उसे कह दो के ये ऊंचाइयां मुश्किल से मिलती हैं
वह सूरज के सफ़र में मोम के बाज़ू लगाता है

मैं काली रात के तेज़ाब से सूरज बनाता हूं
मेरी चादर में ये पैबन्द एक जुगनूं लगाता है

यहां लक्ष्मण की रेखा है न सीता है मगर फिर भी
बहुत फेरे हमारे घर के एक साधु लगाता है

न जाने ये अनोखा फ़र्क़ उस में किस तरह आया
वह अब कॉलर में फूलों की जगह बिच्छू लगाता है

अन्धेरे और उजाले में ये समझौता ज़रूरी है
निशाना मैं लगाता हूं ठिकाने तू लगाता है

तेरे वादे की तेरे प्यार की मोहताज नहीं
ये कहानी किसी किरदार की मोहताज नहीं

आसमां ओढ़ के सोए हैं खुले मैदां में
अपनी ये छत किसी दीवार की मोहताज नहीं

ख़ाली कशकौल[1] पे इतराई हुई फिरती है
ये फक़ीरी किसी दस्तार[2] की मोहताज नहीं

ख़ुद कफ़ीली[3] का हुनर सीख लिया है मैंने
ज़िन्दगी अब किसी सरकार की मोहताज नहीं

मेरी तहरीर है चस्पा मेरी पेशानी पर
अब ज़ुबां ज़िल्लत-ए -इज़हार की मोहताज नहीं

लोग होंठों पे सजाए हुए फिरते हैं मुझे
मेरी शोहरत किसी अख़बार की मोहताज नहीं

रोज़ आबाद नये शहर किया करती है
शायरी अब किसी दरबार की मोहताज नहीं

मेरे अख़लाक[4] की एक धूम है बाज़ारों में
ये वह शह है जो ख़रीदार की मोहताज नहीं

इसे तूफ़ां ही किनारे से लगा देते हैं
मेरी कश्ती किसी पतवार की मोहताज नहीं

मैंने मुल्कों की तरह लोगों के दिल जीते हैं
ये हुकूमत किसी तलवार की मोहताज नहीं

1. भिक्षापात्र
2. पगड़ी
3. आत्मनिर्भरता
4. नैतिकता

मौसमों का ख़याल रक्खा करो
कुछ लहू में उबाल रक्खा करो

ज़िन्दगी रोज़ मरती रहती है
ठीक से देख भाल रक्खा करो

सब लकीरों पे छोड़ रक्खा है
आप भी कुछ कमाल रक्खा करो

याद करते रहा करो माज़ी[1]
एक एक पल उजाल रक्खा करो

जाने कब सच का सामना हो जाए
कोई रस्ता निकाल रक्खा करो

ग़ालिबों को रखो दिमाग़ों में
दिल यग़ाना[2] मिसाल रक्खा करो

सुलह करते रहा करो हर पल
दुश्मनों को निढाल रक्खा करो

ख़ाली ख़ाली उदास उदास आंखें
इन में कुछ ख़्वाब पाल रक्खा करो

फिर वह चाकू चला नहीं सकता
हाथ गर्दन में डाल रक्खा करो

लाख सूरज से दोस्ताना हो
चन्द जुगनू भी पाल रक्खा करो

1. अतीत
2. मशहूर शायर-यास यगाना चंगेज़ी

मुर्ग माही कबाब ज़िन्दा बाद
हर सनद हर खिताब ज़िन्दाबाद

मेरी बस्ती में एक दो अन्धे
पढ़ चुके हर क़िताब ज़िन्दाबाद

यार अपना है क्या रहें न रहें
शहर की आब ओ ताब ज़िन्दा बाद

सीख लेते हैं गूंगे बहरे भी
नारा-ए -इन्क़लाब ज़िन्दाबाद

रूई की तितिलयाँ सलामत बाश
काग़ज़ों के गुलाब ज़िन्दाबाद

लाख पर्दों में रहने वाले तुम
आज कल बेनक़ाब ज़िन्दाबाद

फिर पुरानी लतें पुराने शौक
फिर पुरानी शराब ज़िन्दाबाद

दिन नमाज़ें, नसीहतें, फ़तवे
रात चंग ओ रूबाब ज़िन्दाबाद

रोज़ दो चार छह गुनाह करो
रोज़ क़ारे-सवाब[1] ज़िन्दाबाद

तूने दुनिया जवान रखी है
ऐ बुजुर्ग आफ़ताब ज़िन्दाबाद

1. पुण्य कर्म

ऊंघती रहगुज़र के बारे में
लोग पूछेंगे घर के बारे में

मील के पत्थरों से पूछता हूं
अपने एक हमसफ़र के बारे में

मश्वरा कर रहे हैं आपस में
चन्द जुगनू सहर के बारे में

एक सच्ची ख़बर सुनानी है
एक झूठी ख़बर के बारे में

उंगलियों से लहू टपकता है
क्या लिखें चारागर के बारे में

लाख वह गुमशुदा सही लेकिन
जानता है खिज़र[1] के बारे में

1. सही राह बताने वाले फ़रिश्ते का नाम

बूढ़े हुए यहां कई अय्याश बम्बई
तू आज भी जवान है शाबाश बम्बई

पूछूं के मेरे बच्चों के ख़्वाबों का क्या हुआ
मिल जाए बम्बई में कहीं काश बम्बई

दिल बैठते हैं दौड़ते घोड़ों के साथ-साथ
सोने की फ़सल बोती है क़ल्लाश[1] बम्बई

दो गज़ जमीन भी न मिली दफ़्न के लिये
घर में पड़ी हुई है तेरी लाश बम्बई

हर शख़्स आ के जीत न पायेगा बाज़ियां
उलटे छपे हुए हैं तेरे ताश बम्बई

इस शहर में ज़मीन है महंगी बहुत मगर
घर की छतों पे रखती है आकाश बम्बई

1. कंगाल

हवा ख़ुद अब के हवा के खिलाफ़ है जानी
दीये जलाओ, कि मैदान साफ़ है जानी

हमें चमकती हुई सर्दियों का ख़ौफ़ नहीं
हमारे पास पुराना लिहाफ़ है जानी

वफ़ा का नाम यहां हो चुका बहुत बदनाम
मैं बेवफ़ा हूं मुझे एतराफ़[1] है जानी

है अपने रिश्तों की बुनियाद जिन शराएत पर
वहीं से तेरा मेरा इख़्तिलाफ़[2] है जानी

वह मेरी पीठ में ख़ंजर उतार सकता है
के जंग में तो सभी कुछ मुआफ़ है जानी

मैं जाहिलों में भी लहजा बदल नहीं सकता
मेरी असास यही शीन क़ाफ़ है जानी

1. मंजूर, स्वीकार्य
2. मतभेद

तेरा मेरा नाम ख़बर में रहता था
दिन बीते, एक सौदा सर में रहता था

मेरा रस्ता तकता था एक चांद कहीं
मैं सूरज के साथ सफ़र में रहता था

सारे मंज़र गोरे-गोरे लगते थे
जाने किस का रूप नज़र में रहता था

मैंने अक्सर आंखें मुंदे देखा है
एक मंज़र जो पस मंज़र में रहता था

काठ की कश्ती पीठ थपकती रहती थी
दरियाओं का पांव भंवर में रहता था

उजली उजली तस्वीरें सी बनती हैं
सुनते हैं अल्लाह बशर[1] में रहता था

मीलों तक हम चिड़ियों-से उड़ जाते थे
कोई मेरे साथ सफ़र में रहता था

सुस्ताती है गर्मी जिस के साये में
ये पौधा कल धूप नगर में रहता था

धरती से जब ख़ुद को जोड़े रहते थे
ये सारा आकाश असर में रहता था

सच का बोझ उठाये हूं अब पलकों पर
पहले मैं भी ख़्वाब नगर में रहता था

1. मनुष्य

मुझ में कितने राज़ हैं बतलाऊं क्या?
बन्द एक मुद्दत से हूं खुल जाऊं क्या?

आजिज़ी, मिन्नत, ख़ुशामद, इल्तिजा
और मैं क्या-क्या करूं मर जाऊं क्या?

कल यहां मैं था जहां तुम आज हो
मैं तुम्हारी ही तरह इतराऊं क्या?

तेरे जलसे में तेरा परचम लिये
सैकड़ों लाशें भी हैं गिनवाऊं क्या?

एक पत्थर है वह मेरी राह का
गर न ठुकराऊं तो ठोकर खाऊं क्या?

फिर जगाया तूने सोये शेर को
फिर वही लहजा दराज़ी ! आऊं क्या?

दरबदर जो थे वो दीवारों के मालिक हो गये
मेरे सब दरबान, दरबारों के मालिक हो गये

लफ़्ज़ गूंगे हो चुके तहरीर[1] अन्धी हो चुकी
जितने मुख़्बिर थे वह अख़बारों के मालिक हो गये

लाल सूरज आसमां से घर की छत पर आ गया
जितने थे बेकार सब कारों के मालिक हो गये

और अपने घर में हम बैठे रहे मशअल बकफ़[2]
चन्द जुगनू चांद और तारों के मालिक हो गये

देखते ही देखते कितनी दुकानें खुल गईं
बिकने आए थे वह बाज़ारों के मालिक हो गये

सर बकफ़[3] थे तो सरों से हाथ धोना पड़ गया
सर झुकाए थे वह दस्तारों[4] के मालिक हो गये

1. लिखित विवरण
2. मशाल उठाए हुये
3. सर उठाए हुये
4. पगड़ी

दो गज़ टुकड़ा उजले उजले बादल का
याद आता है एक दुपट्टा मलमल का

शहर के मंज़र देख के चीखा करता है
मेरे अन्दर इक सन्नाटा जंगल का

बादल हाथी घोड़े ले कर आते हैं
लेकिन अपना रस्ता तो है पैदल का

मुझ से आकर मेरी ज़ुबां में बात करे
लिखता रहता है जो खाता हर पल का

आते जाते अन्धी आंखें पढ़ती हैं
हर पत्थर पर नाम लिखा है मखमल का

खुले-खुले से रहने के हम आदी हैं
ध्यान किसे है दरवाज़े की सांकल का

देखें किस दिन पहुंचोगे तुम तारों तक
ऊंचाई तक एक रस्ता है दलदल का

गीला दामन गीली-गीली आंखें हैं
हर मौसम में एक मौसम है जल-थल का

मुझको अपने रंग में ढाला दुनिया ने
सांप हुआ हूं खुद ही अपने सन्दल का

देखें कितना बाज़ारों में आए उछाल
हम सोना हैं और ज़माना पीतल का

दुआओं में वह तुम्हें याद करने वाला है
कोई फ़कीर की इमदाद[1] करने वाला है

ये सोच-सोच के शर्मिन्दगी सी होती है
वह हुक्म देगा जो फ़रियाद करने वाला है

ज़मीन हम भी तेरे वारिसों में हैं कि नहीं
वह इस सवाल को बुनियाद करने वाला है

यही ज़मीन मुझे गोद लेने वाली है
ये आसमां मेरी इमदाद करने वाला है

ये वक्त तू जिसे बरबाद करता रहता है
ये वक्त ही तुझे बरबाद करने वाला है

ख़ुदा दराज़ करे उम्र मेरे दुश्मन की
कोई तो है जो मुझे याद करने वाला है

1. मदद

सबब वह पूछ रहे हैं उदास होने का
मेरा मिज़ाज नहीं बेलिबास होने का

नया बहाना है हर पल उदास होने का
ये फ़ायदा है तेरे घर के पास होने का

महकती रात के लम्हों, नज़र रखो मुझ पर
बहाना ढूँढ़ रहा हूं उदास होने का

मैं तेरे पास बता किस गरज़ से आया हूं
सबूत दे मुझे चेहरा शनास[1] होने का

मेरी ग़ज़ल से बना ज़ेहन में कोई तस्वीर
सबब न पूछ मेरे देवदास होने का

कहाँ हो आओ मेरी भूली बिसरी यादों आओ
ख़ुश आमदीद, है मौसम उदास होने का

कई दिनों से तबीयत मेरी उदास न थी
यही जवाज़ बहुत है उदास होने का

मैं अहमियत भी समझता हूं कहकहों की मगर
मज़ा कुछ अपना अलग है उदास होने का

मेरे लबों से तबस्सुम मज़ाक करने लगा
मैं लिख रहा था क़सीदा उदास होने का

पता नहीं ये परिन्दे कहां से आ पहुंचे
अभी ज़माना कहां था उदास होने का

मैं कह रहा हूं कि ऐ दिल इधर-उधर न भटक
गुज़र न जाए ज़माना उदास होने का

1. चेहरा पढ़ लेने वाला

अंधेरे चारों तरफ सांय सांय करने लगे
चिराग़ हाथ उठा कर दुआएं करने लगे

तरक़्क़ी कर गये बीमारियों के सौदागर
ये सब मरीज़ हैं जो अब दुआएं करने लगे

ज़मीं पर आ गये आंखों से टूट कर आंसू
बुरी ख़बर है फ़रिश्ते ख़ताएं करने लगे

झुलस रहे हैं यहां छांव बांटने वाले
वह धूप है के शजर इल्तिजाएं करने लगे

अजीब रंग था मजलिस का , खूब महफ़िल थी
सफ़ेदपोश उठे कांय कांय करने लगे

अगर खिलाफ़ हैं होने दो जान थोड़ी है
ये सब धुआं है कोई आसमान थोड़ी है

लगेगी आग तो आएंगे घर कई ज़द में
यहां पे सिर्फ़ हमारा मकान थोड़ी है

मैं जानता हूं कि दुश्मन भी कम नहीं लेकिन
हमारी तरह हथेली पे जान थोड़ी है

जो आज साहिब-ए-मसनद[1] हैं कल नहीं होंगे
किरायेदार हैं ज़ाती मकान थोड़ी है

हमारे मुंह से जो निकले वही सदाक़त[2] है
हमारे मुंह में तुम्हारी ज़बान थोड़ी है

सभी का खून है शामिल यहां की मिट्टी में
किसी के बाप का हिन्दुस्तान थोड़ी है

1. सिंहासन पर विराजमान , सत्ताधीश
2. सच्चाई , वास्तविकता

बरछी ले कर चांद निकलने वाला है
घर चलिए अब सूरज ढलने वाला है

मंज़रनामा वही पुराना है लेकिन
नाटक का उनवान[1] बदलने वाला है

तौर तरीक़े बदले नरम उजालों ने
हर जुगनू अब आग उगलने वाला है

धूप के डर से कब तक घर में बैठोगे
सूरज तो हर रोज़ निकलने वाला है

एक पुराने खेल खिलौने जैसी है
दुनिया से अब कौन बहलने वाला है

दहशत का माहौल है सारी बस्ती में
क्या कोई अख़बार निकलने वाला है

बे सिमती का मारा मेरा नन्हापन
भीड़ के पीछे-पीछे चलने वाला है

सब को दुःख से मुक्ति मिलने वाली है
बोतल से इक देव निकलने वाला है

महंगी कालीनें लेकर क्या कीजेगा
अपना घर भी एक दिन जलने वाला है

सारी सड़कें मातम करती रहती हैं
हर बच्चा रस्सी पर चलने वाला है

1. शीर्षक

रात की धड़कन जब तक जारी रहती है
सोते नहीं हम ज़िम्मेदारी रहती है

जब से तूने हल्की-हल्की बातें कीं
पर तबीयत भारी-भारी रहती है

पांव कमर तक धंस जाते है धरती में
हाथ पसारे जब खुद्दारी रहती है

वह मंज़िल पर अक्सर देर से पहुंचे हैं
जिन लोगों के पास सवारी रहती है

छत से उसकी धूप के नेज़े[1] आते हैं
जिस आंगन में छांव हमारी रहती है

घर के बाहर ढूंढता रहता हूं दुनिया
घर के अन्दर दुनियादारी रहती है

1. बरछी

एक दो आसमान और सही
और थोड़ी उड़ान और सही

शहर आबाद हों दरिन्दों से
जंगलों में मचान और सही

धूप को नींद आ भी सकती है
छांव की दास्तान और सही

बारिशों के हौसले बुलन्द रहें
मेरा कच्चा मकान और सही

ये पसीना तो अपनी पूंजी है
चन्द मुट्ठी लगान और सही

गालियों से नवाज़ता है मुझे
एक अहल-ए-जुबान और सही

शहर में अमन है कई दिन से
कोई ताज़ा बयानऔर सही

बैर दुनिया से क़बीले से लड़ाई लेते
एक सच के लिये किस-किस से बुराई लेते

आबले अपने ही अंगारों के ताज़ा हैं अभी
लोग क्यों आग हथेली पे पराई लेते

बर्फ़ की तरह दिसम्बर का सफ़र होता है
हम उसे साथ न लेते तो रज़ाई लेते

कितना मानूस सा हमदर्दों का ये दर्द रहा
इश्क़ कुछ रोग नहीं था जो दवाई लेते

चांद रातों में हमें डसता है दिन में सूरज
शर्म आती है अंधेरों से कमाई लेते

तुमने जो तोड़ दिये ख़्वाब हम उनके बदले
कोई क़ीमत कभी लेते तो खुदाई लेते

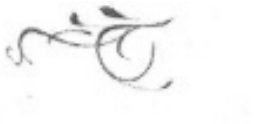

तो क्या बारिश भी ज़हरीली हुई है
हमारी फ़स्ल क्यों नीली हुई है

ये किस ने बाल खोले मौसमों के
हवा क्यों इतनी बर्फ़ीली हुई है

किसी दिन पूछिये सूरजमुखी से
कि रंगत किस लिये पीली हुई है

सफ़र का लुत्फ़ बढ़ता जा रहा है
ज़मीं कुछ और पथरीली हुई है

सुनहरा लग रहा है एक एक पल
कई सदियों में तब्दीली हुई है

दिखाया है अगर सूरज ने गुस्सा
तो बालू और चमकीली हुई है

ख़ाक होना तय हुआ अब ख़ाक़सारी के लिये
ये दुकां हमने लगाई थी उधारी के लिये

कुछ पलों की तितलियों के रंग मेरे संग हैं
चन्द ख़ुशियां हैं गर्मों की पासदारी[1] के लिये

दांव पर लगने लगी हैं इज़्ज़तें सादात की
इश्क़ की राहें बहुत आसां हैं ख़्वारी के लिये

एक समन्दर अपने ही अन्दर डुबोता है मुझे
एक कश्ती चाहिए मुझको सवारी के लिये

धड़कने पल भर भी दिल से दूर रह सकती नहीं
देवियां पागल हुई हैं एक पुजारी के लिये

तजुर्बा अपना असद[2] से कुछ अलग है दोस्तों
मय ज़रूरी भी है यक गोना ख़ुमारी के लिये

1. अभिवादन
2. मिर्ज़ा असदुल्लाह खाँ ग़ालिब

आंख में पानी रखो होठों पे चिंगारी रखो
ज़िन्दा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो

राह के पत्थर से बढ़ कर कुछ नहीं हैं मंज़िलें
रास्ते आवाज़ देते हैं सफ़र जारी रखो

एक ही नद्दी के हैं ये दो किनारे दोस्तों
दोस्ताना ज़िन्दगी से मौत से यारी रखो

आते-जाते पल ये कहते हैं हमारे कान में
कूच का एलान होने को है तैयारी रखो

ये ज़रूरी है कि आंखों का भरम क़ायम रहे
नींद रखो या न रखो ख़्वाब मेयारी रखो

ये हवाएं उड़ न जाएं ले के काग़ज़ का बदन
दोस्तों मुझ पर कोई पत्थर ज़रा भारी रखो

ले तो आए शायरी बाज़ार में राहत मियां
क्या ज़रूरी है के लहजे को भी बाज़ारी रखो

चरागों को उछाला जा रहा है
हवा पे रोब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीत होगी
मगर सिक्का उछाला जा रहा है

वह देखो मयक़दे के रास्ते में
कोई अल्लाह वाला जा रहा है

थे पहले ही कई सांप आस्तीं में
अब एक बिच्छू भी पाला जा रहा है

मेरे झूठे गिलासों की चखा कर
बेहकतों को संभाला जा रहा है

हमीं बुनियाद का पत्थर हैं लेकिन
हमें घर से निकाला जा रहा है

जनाज़े पर मेरे लिख देना यारों
मुहब्बत करने वाला जा रहा है

ये सर्द रातें भी बनकर धुआँ उड़ जाएं
वह एक लिहाफ़ मैं ओढ़ूं तो सर्दियां उड़ जाएं

खुदा का शुक्र कि मेरा मकां सलामत है
हैं इतनी तेज़ हवाएं के बस्तियां उड़ जाएं

ज़मीं से एक तआल्लुक ने बांध रखा है
बदन में खून नहीं हो तो हड्डियां उड़ जाए

बिखर-बिखर सी गई है क़िताब सांसों की
ये कागज़ात ख़ुदा जाने कब कहां उड़ जाएं

रहे ख़याल कि मजजूब-ए-इश्क हैं हम लोग
अगर ज़मीन से फूंके तो आसमां उड़ जाएं

हवाएं बाज़ कहां आती हैं शरारत से
सरों पे हाथ न रखें तो पगड़ियां उड़ जाएं

बहुत गुरूर है दरिया को अपने होने पर
जो मेरी प्यास से उलझे तो धज्जियां उड़ जाएं

इससे पहले के हवा शोर मचाने लग जाए
मेरे अल्लाह मेरी खाक ठिकाने लग जाए

घेरे रहते हैं कई ख़्वाब मेरी आंखों को
काश कुछ देर मुझे नींद भी आने लग जाए

तो ज़रूरी है कि मैं मिस्र से हिजरत कर जाऊं
जब ज़ुलेखा ही मेरे दाम घटाने लग जाए

साल भर ईद का रस्ता नहीं देखा जाता
वह गले मुझसे किसी और बहाने लग जाए

मेरी कोशिश है कि हर शाम ये ढलता सूरज
शब की दहलीज़ पे एक शमा जलाने लग जाए

ख़ुश्क दरियाओं में हल्की सी रवानी और है
रेत के नीचे अभी थोड़ा सा पानी और है

जो भी मिलता है उसे अपना समझ लेता हूं मैं
इक बीमारी मुझे ये ख़ानदानी और है

बोरिये पे बैठिये कुल्हड़ में पानी पीजिये
हम कलन्दर हैं हमारी मेज़बानी और है

एक कहानी ख़त्म करके वह बहुत है मुतमईन[1]
भूल बैठा है कि आगे एक कहानी और है

कौन फिर पूछेगा गूंगे मुनसिफ़ों से ख़ैरियत
एक ले-दे के हमारी बे ज़बानी और है

एक दिन इस शहर की कीमत लगाई जाएगी
गांव में थोड़ी बहुत खेती-किसानी और है

1. संतुष्ट